

इस्लाम सामाजिक अधिकारों को कैसे संरक्षित करता है ?

इस्लाम हमें सिखाता है कि सामाजिक कर्तव्य प्यार, दया और दूसरों के प्रति सम्मान पर आधारित होने चाहिएँ ।

इस्लाम ने समाज को जोड़ने वाले सभी रिश्तों के आधार, मानदंड एवं नियम बनाए हैं और सभी रिश्तों के अधिकार तथा कर्तव्य तय किए हैं ।

"तथा अल्लाह की इबादत करो और किसी चीज़ को उसका साझी न बनाओ तथा माता-पिता, रिश्तेदारों, अनाथों, निर्धनों, नातेदार पड़ोसी, अपरिचित पड़ोसी, साथ रहने वाले साथी, यात्री और अपने दास-दासियों के साथ अच्छा व्यवहार करो । निःसंदेह अल्लाह उससे प्रेम नहीं करता, जो इतराने वाला, डींगें मारने वाला हो ।" [260] [सूरा अल-निसा : 36]

"तथा उनके साथ भली-भाँति जीवन व्यतीत करो । फिर यदि तुम उन्हें नापसंद करो, तो संभव है कि तुम किसी चीज़ को नापसंद करो और अल्लाह उसमें बहुत ही भलाई रख दे ।" [261] [सूरा अल-निसा : 19]

"ऐ ईमान वालो ! जब तुमसे कहा जाए कि सभाओं में जगह कुशादा कर दो, तो कुशादा कर दिया करो । अल्लाह तुम्हारे लिए विस्तार पैदा करेगा । तथा जब कहा जाए कि उठ जाओ, तो उठ जाया करो । अल्लाह तुममें से उन लोगों के दर्जे ऊँचे [8] कर देगा, जो ईमान लाए तथा जिन्हें ज्ञान प्रदान किया गया है । तथा तुम जो कुछ करते हो, अल्लाह उससे भली-भाँति अवगत है ।" [262] [सूला अल-मुजादला : 11]

इस्लाम - प्रश्न एवं उत्तर के माध्यम से

Source: <https://www.mawthuq.net/demo/qa/hi/show/98/>

Arabic Source: <https://www.mawthuq.net/demo/qa/ar/show/98/>

Sunday 7th of December 2025 10:07:29 AM